

घरकुल

जीव मूक पक्षी स्वप्न होई भार  
पायी धूळ वाट न दिसे ठाव      // १ //

आसवांचे डोह सोसवेना नीज  
रात्र का उदास आभाळ गढूळ.      // २ //

संपेना ती वाट दिशा सैरभैर  
कुणी पहाटे रे उंबऱ्यात वाट      // ३ //

उतरतीस छाया दिस भाकणूक  
उगवतीस सावल्या सांज ओंजळीत      // ४ //

होता संध्याकाळ भासे रिक्त सर्व  
घरट्यास येता सुरु नवे पर्व      // ५ //

उनपाऊस खेळ श्रावण संसार  
सोबतीला घरकुल मायेची पांघर      // ६ //

सपु - सचिन पु. कुलकर्णी